प्रकाशक की ओर से

यह शायद बहुत आश्चर्य की बात नहीं है कि स्पैन का यह अंक अमेरिका के राष्ट्रपतियों और विशेष रूप से 44वें राष्ट्रपति बाराक ओबामा को समर्पित है।

20 जनवरी को, एक लम्बे और कड़े प्रतिस्पर्धी चुनाव अभियान के बाद अमेरिका ने एक नए शासन को सत्ता का हस्तांतरण पूरा किया। अमेरिका में इस प्रक्रिया का पालन जहां 220 वर्ष से, हमारे पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन के शपथ ग्रहण से ही हो रहा है, वहीं अमेरिकियों, भारतीयों और संसारभर के लोगों ने नए राष्ट्रपति के समक्ष एकसाथ खड़ी चुनौतियों पर टिप्पणी और उनकी सफलता की कामना की है।

यह शपथ ग्रहण दिवस इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि बाराक ओबामा एक ऐसे राष्ट्रीय उत्सव में अमेरिका के पहले अफ्रीकी-अमेरिकी राष्ट्रपति बने जिसने अन्ततः इस प्रश्न पर विराम लगा दिया कि क्या अमेरिकी एक अश्वेत राष्ट्रपति को स्वीकार कर सकते हैं। अब कोई भी दोबारा यह प्रश्न नहीं पूछेगा और हम आशा करते हैं कि जल्द ही लोग हैरान भी हुआ करेंगे कि हंगामा किस बात पर था। शपथ ग्रहण दिवस पर जवाब साफ था : ''हां, हम कर सकते हैं!''

इस घटना में अनेक ऐतिहासिक अनुगूंजे सुनी जा सकती हैं। अभी कुल 40 बरस पहले अमेरिका के जातीय समानता के महान स्वप्नदर्शी, नागरिक अधिकार आन्दोलन नेता मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने पूछा था कि क्या उनके बच्चों का ''अपनी चमड़ी के रंग नहीं, अपने चरित्र के गुणों'' के आधार पर मूल्यांकन सम्भव हो पाएगा? राष्ट्रपति ओबामा का शपथ ग्रहण किंग की 80वीं जयन्ती के राष्ट्रीय अवकाश के अगले दिन था।

राष्ट्रपति ओबामा का शपथ ग्रहण ''एक अधिक सम्पूर्ण एकता'' रचने के संघर्ष की प्रक्रिया में अमेरिका में दासता का अंत करने वाले अब्राहम लिंकन की 200वीं जयन्ती से कुछ ही सप्ताह पहले था। शपथ ग्रहण के दौरान राष्ट्रपति ओबामा ने पद की वही शपथ ली जो जॉर्ज वाशिंगटन और उनके बाद के सभी राष्ट्रपतियों ने ली थी; उन्होंने उसी बाइबल पर हाथ रखा जिस पर हाथ रखकर अब्राहम लिंकन ने शपथ ग्रहण की थी।

भारत में हमने चाणक्यपुरी, नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास के 50 वर्ष होने पर समारोह मनाया। एडवर्ड डरेल स्टोन द्वारा डिज़ाइन की गई यह ऐतिहासिक इमारत अपने समय में एक कलात्मक उपलब्धि के रूप में सराही गई और बाद में वाशिंगटन डी.सी. में जॉन एफ. केनेडी सेंटर फ़ार द परफॉर्मिंग आर्ट्स के लिए प्रतिमान बनी।

फरवरी में हम मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की भारत यात्रा की 50वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाना चाहते हैं। तब उन्होंने इसे स्वाधीनता के लिए भारत के संघर्ष में मोहनदास करमचन्द गांधी के कार्य और उनके जीवन के अध्ययन के लिए ''एक तीर्थयात्रा'' कहा था। किंग और कई अन्य लोगों ने गांधी की कार्यविधि में आवश्यकतानुसार अनुकूलन करके उसका प्रभावी उपयोग अमेरिकी नागरिक अधिकार आन्दोलन में किया। अपनी यात्रा के दौरान किंग ने मुम्बई में कहा, ''अमेरिका की नियति भारत की, और प्रत्येक राष्ट्र की नियति से बंधी है।'' हम उनसे सहमत हैं, स्पैन के इस अंक में भारत की उस यात्रा, किंग के लिए उसका अर्थ और गांधी के नेतृत्व से किंग और राष्ट्रपति ओबामा को मिली प्रेरणा पर लॉरिंडा कीज़ लौंग का लेख और कुछ ऐतिहासिक चित्र प्रस्तुत हैं।

राष्ट्रपति ओबामा ने कहा है कि वह गांधी से भी प्रेरणा पाते हैं, ''क्योंकि वह असाधारण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधारण लोगों के एकजुट होने से सम्भव हुए रूपान्तरकारी परिवर्तन को साकार करते हैं।'' उनका आधिकारिक चित्र प्राप्त होने तक हम राष्ट्रपति ओबामा के उनके भूतपूर्व सेनेट कार्यालय में लिए गए उस चित्र का उपयोग करेंगे जिसमें उनके पीछे दीवार पर लिंकन, किंग और गांधी के चित्र टंगे हैं।

स्पैन के इस अंक में राष्ट्रपति वाशिंगटन और राष्ट्रपति लिंकन पर केंद्रित लेख हैं, शपथ ग्रहण दिवस से जुड़ी परम्पराओं और उनमें आए बदलावों पर ऋचा वर्मा का लेख है। मस्ती-मजे के लिए पिछले अंक की राष्ट्रपति सम्बन्धी प्रश्नावली के उत्तर, अमेरिकी राष्ट्रपतियों के बारे में कुछ रोचक तथ्य, दीपांजली काकाती का लेख ''50 बरस पहले'', और साथ ही हमारे नए राष्ट्रपति से प्रेरित लोकप्रिय गीतों के बारे में लॉरेंस ग्लास्को का लेख प्रस्तुत है।

इतना ही नहीं, स्पैन के इस अंक में आपको भगवद्गीता पर आधारित एक नए अमेरिकी ऑपेरा, एक शानदार भारतीय अमेरिकी कॉमेडियन, स्वास्थ्य देखभाल में नवाचार और कैलिफोर्निया तट से लगे सैंटा कैटेलिना आइलैंड पर भी रोचक सामग्री मिलेगी। कठपुतली नाटकों की महान परम्परा में रुचि रखने वाले भारतीयों को यह पढ़ना भाएगा कि अमेरिकियों ने भी इस कला को अपनाया है और संसार का सबसे बड़ा पुतली कला संग्रहालय बना दिया है। अपने विचार हमें बताइए!

Gary Adkins